# जपजी साहिब

(हिन्दी में)

Author: Kulbir S Thind, MD, San Mateo, California, USA

**१ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥**

परमात्मा एक है, जिस का नाम 'अस्तित्व' है, जो सृष्टि का रचने वाला है, जो सब में व्यापक है, भय से रहित है, बैर-रहित है, जिस का स्वरूप काल से परे है, (भाव, वह नाश-रहित है), जो यूनो में नहीं आता, जिस का प्रकाश आप ही आप से हुआ है और जो सतगुरु की कृपा से मिलता है। ❀ नोट: यह उपरोक्त सिखों की गुरु-शिक्षा का मूल-मंत्र है। इस से आगे लिखी गई वाणी का नाम है 'जपु'। वाणी 'जपु' लफ़्ज़ 'आदि सच' से शुरू होती है।

**॥ जपु ॥**

"जपु" वाणी का नाम है।

**आदि सचु जुगादि सचु ॥**

परमात्मा शुरू से मौजूद है तथा युगों-युगों से मौजूद है।

**है भी सचु नानक होसी भी सचु ॥१॥**

हे नानक! अब भी मौजूद है तथा बाद में भी मौजूद रहेगा ॥१॥

**सोचै सोचि न होवई जे सोची लख वार ॥**

अगर मैं लाख बारी (भी स्नान आदि से काया की) स्वच्छता करूँ, (तो भी ऐसा) स्वच्छता करने से (मन की) स्वच्छता नहीं हो सकती।

**चुपै चुप न होवई जे लाइ रहा लिव तार ॥**

अगर मैं एक-तार (समाधि बनाए) चुप रहूँ (तो भी ऐसे) चुप कर रहने से मन की शांति नहीं हो सकती।

**भुखिआ भुख न उतरी जे बंना पुरीआ भार ॥**

अगर मैं पदार्थों के ढेर भी संभाल लूँ, तो भी तृष्णा के अधीन रहने से तृष्णा दूर नहीं हो सकती।

**सहस सिआणपा लख होहि त इक न चलै नालि ॥**

अगर (मेरे में) हज़ारों तथा लाखों चतुराई भी हों, (तो भी इस में से) एक भी चतुराई साथ नहीं देती।

**किव सचिआरा होईऐ किव कूड़ै तुटै पालि ॥**
(तो ऐसे) परमात्मा का प्रकाश पाने के लिए योग्य कैसे बन सकते हैं (और हमारे अन्दर का) झूठ का परदा कैसे टूट सकता है?

**हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि ॥१॥**
रज़ा के मालिक परमात्मा के हुक्म में चलना ही एक विधि है जो धुर से ही जब से जगत बना है, लिखी चली आ रही है, हे नानक! ॥१॥

**हुकमी होवनि आकार हुकमु न कहिआ जाई ॥**
परमात्मा के हुक्म अनुसार सब काय बनती हैं, (परन्तु यह) हुक्म बताया नहीं जा सकता कि कैसा है।

**हुकमी होवनि जीअ हुकमि मिलै वडिआई ॥**
ईश्वर के हुक्म अनुसार ही सब जीव पैदा होते हैं और हुक्म अनुसार ही शोभा मिलती है।

**हुकमी उतमु नीचु हुकमि लिखि दुख सुख पाईअहि ॥**
ईश्वर के हुक्म से कोई मनुष्य अच्छा (बन जाता) है, कोई बुरा। उस के हुक्म में ही भाग्य लिखे अनुसार मनुष्य दुःख तथा सुख भोगते हैं।

**इकना हुकमी बखसीस इकि हुकमी सदा भवाईअहि ॥**
हुक्म में ही कहीं मनुष्यों ऊपर (परमात्मा की) कृपा होती है, और उस के हुक्म में ही कई मनुष्य सदा जनम मरने के चक्र में घूमते रहते हैं।

**हुकमै अंदरि सभु को बाहरि हुकम न कोइ ॥**
हरेक जीव ईश्वर के हुक्म में ही है, कोई जीव हुक्म से बाहर नहीं हो सकता।

**नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ ॥२॥**
हे नानक! अगर कोई मनुष्य परमात्मा के हुक्म को समझ ले तो वह अहंकार की बातें नहीं करता ॥२॥

**गावै को ताणु होवै किसै ताणु ॥**
कुछ लोग उसकी शक्ति का गायन करते हैं कि वह शक्ति किसके पास है?

**गावै को दाति जाणै नीसाणु ॥**
कोई मनुष्य उस के अनुग्रह को ही गाता है, (क्योंकि इन वरदानों को वह ईश्वर के अनुग्रह का) निशान समझता है।

**गावै को गुण वडिआईआ चार ॥**
कोई मनुष्य ईश्वर के सुन्दर गुण तथा सुन्दर बुड़ाईं वर्णन करता है।

**गावै को विदिआ विखमु वीचारु ॥**
कोई मनुष्य विद्या के बल से परमात्मा के कठिन ज्ञान को गाता है (भाव, शास्त्र आदि से आत्मिक तत्त्व ज्ञान के कठिन विषयों ऊपर विचार करता है)।

**गावै को साजि करे तनु खेह ॥**
कोई मनुष्य ऐसे गाता है, 'परमात्मा काय को बना के (ऐसे) राख बना देता है'।

**गावै को जीअ लै फिरि देह ॥**
कोई ऐसे गाता है, 'हरि (शरीरों में से) जान निकाल के ऐसे (दूजे शरीरों में) डाल देता है'।

**गावै को जापै दिसै दूरि ॥**
कोई मनुष्य कहता है, 'परमात्मा दूर दिखता है, दूर दिखता है';

**गावै को वेखै हादरा हदूरि ॥**
परन्तु कोई कहता है, '(नहीं, निकट है), सब जगह पर हाज़िर है, सब को देख रहा है'।

**कथना कथी न आवै तोटि ॥**
हुक्म के वर्णन करने वाले लोगों की कोई कमी नहीं (भाव, वर्णन कर-कर के हुक्म का अंत नहीं पड़ सका, हुक्म का सही स्वरूप नहीं भाल सका);

**कथि कथि कथी कोटी कोटि कोटि ॥**
बेशक करोड़ों ही जीवों ने अनेक बारी (परमात्मा के हुक्म का) वर्णन किया है।

**देदा दे लैदे थकि पाहि ॥**
दातार परमात्मा (सब जीवों को आहार) दे रहा है, परन्तु जीव ले-ले के थक जाते होते हैं।

**जुगा जुगंतरि खाही खाहि ॥**
(सब जीव) सदा से ही (ईश्वर के दिए हुए पदार्थ) खाते चले आ रहे हैं।

**हुकमी हुकमु चलाए राहु ॥**
हुक्म वाले ईश्वर का हुक्म ही (संसार की कार वाला) राह चला रहा है।

**नानक विगसै वेपरवाहु ॥३॥**
हे नानक! वह भगवान सदा बेपरवाह है तथा ख़ुश है ॥३॥

**साचा साहिबु साचु नाइ भाखिआ भाउ अपारु ॥**
परमात्मा सत्य (सदा-स्थिर रहने वाला) है, उस का नियम भी सदा अटल है। उस की बोली प्रेम है और वह आप परमात्मा अनन्त है।

**आखहि मंगहि देहि देहि दाति करे दातारु ॥**
हम जीव उस से रहमतों मांगते हैं तथा कहते हैं,'(हे हरि! हमें रहमतों) देह'। वह दातार वरदान करता है।

**फेरि कि अगै रखीऐ जितु दिसै दरबारु ॥**
तो ऐसे हम कौन सी भेंट उस परमात्मा के आगे भेट करें, जिस के सदके हमें उस का दरबार दिखने लग जाए?

**मुहौ कि बोलणु बोलीऐ जितु सुणि धरे पिआरु ॥**
हम मुंह से कौन सा वचन बोलिए (भाव, कैसे अरदास करें) जिस को सुन के वह हरि (हमें) प्यार करें।

**अमृत वेला सचु नाउ वडिआई वीचारु ॥**
प्रभात का समय हो, नाम (स्मरण करें) तथा उस की शोभा की विचार करें।

**करमी आवै कपड़ा नदरी मोखु दुआरु ॥**
प्रभु की मेहर से काय-वस्त्र मिलता है और उस की कृपा की नजर से ही ईश्वर का द्वार प्राप्त हो जाता है।

**नानक एवै जाणीऐ सभु आपे सचिआरु ॥४॥**
हे नानक! ऐसे यह समझें कि वह सचा (अस्तित्व वाला) परमात्मा सब जगह पर भरपूर है ॥४॥

**थापिआ न जाइ कीता न होइ ॥**
ना वह पैदा किया जा सकता है और ना ही हमारे बनाने से बनता है।

**आपे आपि निरंजनु सोइ ॥**
वह निर्मल आप ही आप है (वह परमात्मा माया के प्रभाव से परे है)।

**जिनि सेविआ तिनि पाइआ मानु ॥**
जिस मनुष्य ने उस परमात्मा का स्मरण किया है, उस ने ही श्रेष्ठता प्राप्त कर ली है।

**नानक गावीऐ गुणी निधानु ॥**
हे नानक! (आओ) हम भी उस गुणा के ख़ज़ाने हरि की प्रशंसा करें।

**गावीऐ सुणीऐ मनि रखीऐ भाउ ॥**
(आओ, प्रभु के गुण) गाविए तथा सुनें और आपने मन में उसका प्रेम बनाएं।

**दुखु परहरि सुखु घरि लै जाइ ॥**
(ऐसे) अपना दुःख दूर करके सुख को हृदय में वसा लें।

**गुरमुखि नादं गुरमुखि वेदं गुरमुखि रहिआ समाई ॥**
(परन्तु उस ईश्वर का) नाम तथा ज्ञान गुरु के द्वारा (प्राप्त होता है)। गुरु के द्वारा ही (यह प्रतीत होता है कि) वह हरि सब जगह पर व्यापक है।

**गुरु ईसरु गुरु गोरखु बरमा गुरु पारबती माई ॥**
गुरु ही (हमारे लिए) शिव है, गुरु ही (हमारे लिए) गोरख तथा ब्रह्मा है और गुरु ही (हमारे लिए) देवी पारबती है।

**जे हउ जाणा आखा नाही कहणा कथनु न जाई ॥**
वैसे तो (परमात्मा के हुक्म को) अगर मैं समझ भी लूं, तो भी उस का वर्णन नहीं कर सकता (परमात्मा के हुक्म का कथन नहीं किया जा सकता)।

**गुरा इक देहि बुझाई ॥**
हे सतगुरु! हम को एक समझ दे,

**सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ॥५॥**
कि जो सब जीवों को रहमतों देने वाला एक ईश्वर है, मैं उस को भुला ना दूँ ॥५॥

**तीरथि नावा जे तिसु भावा विणु भाणे कि नाइ करी ॥**
मैं तीरथ पर स्नान तब करूं अगर ऐसे करने से उस परमात्मा को ख़ुश कर सकूं, परन्तु अगर ऐसे परमात्मा ख़ुश नहीं होता, तो मेरे (तीरथ पर) स्नान करने से क्या फायदा?

**जेती सिरठि उपाई वेखा विणु करमा कि मिलै लई ॥**
परमात्मा की पैदा की हुई जितनी भी दुनिया मैं देख रहा हूँ, (इस में) परमात्मा की कृपा के बग़ैर किसे को कुछ नहीं मिलता, कोई कुछ नहीं ले सकता।

**मति विचि रतन जवाहर माणिक जे इक गुर की सिख सुणी ॥**
अगर सतगुरु की एक शिक्षा सुन ली जाये, तो मनुष्य की बुद्धि के अन्दर रतन, जवाहर तथा मोती (भाव, परमात्मा के गुण) पैदा हो जाते हैं।

**गुरा इक देहि बुझाई ॥**
हे सतगुरु! हम को एक यह समझ दे,

**सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ॥६॥**
कि जो सब जीवों को रहमतों देने वाला है उस परमात्मा को हम ना भूल जायें ॥६॥

**जे जुग चारे आरजा होर दसूणी होइ ॥**
अगर किसे मनुष्य की उमर चार युगों जितनी हो जाये, और इस से भी दस गुणी और (उमर) हो जाये,

**नवा खंडा विचि जाणीऐ नालि चलै सभु कोइ ॥**
अगर वह सब सृष्टि में भी मशहूर हो जाये और हरेक मनुष्य उस के पीछे चले।

**चंगा नाउ रखाइ कै जसु कीरति जगि लेइ ॥**
अगर वह अच्छी बड़ाई प्राप्त करने से सब संसार में शोभा भी प्राप्त कर ले,

**जे तिसु नदरि न आवई त वात न पुछै के ॥**
अगर वह मनुष्य परमात्मा की मेहर की नज़र में नहीं आ सकता, तो वह उस मनुष्य जैसा है जिस की कोई ख़बर भी नहीं पूछता।

**कीटा अंदरि कीटु करि दोसी दोसु धरे ॥**
(मगर परमात्मा ऐसे मनुष्य को) कीड़ों में एक मामूली जैसा कीड़ा समझता है और परमात्मा उस को (प्रभु-नाम को भूलने का) दोषी होने का दोष लगाता है।

**नानक निरगुणि गुणु करे गुणवंतिआ गुणु दे ॥**
हे नानक! वह परमात्मा गुण-हीन मनुष्य में गुण पैदा कर देता है तथा गुणी मनुष्यों को भी गुण वही प्रदान करता है।

**तेहा कोइ न सुझई जि तिसु गुणु कोइ करे ॥७॥**
ऐसा कोई और नहीं दिखता, जो निर्गुण जीव को कोई गुण प्रदान कर सकता हो ॥७॥

**सुणिऐ सिध पीर सुरि नाथ ॥**
प्रभु की प्रशंसा सुनने से (साधारण मनुष्य) सिद्ध, पीर, देवता और नाथ का पद प्राप्त कर लेते हैं,

**सुणिऐ धरति धवल आकास ॥**
प्रभु की प्रशंसा सुनने से उस को यह समझ हो जाती है कि धरती आकाश का सहारा वह प्रभु है,

**सुणिऐ दीप लोअ पाताल ॥**
प्रभु की प्रशंसा सुनने से समझ पड़ती है कि प्रभु सब दीपों, लोगों, पाताल में व्यापक है।

**सुणिऐ पोहि न सकै कालु ॥**
प्रभु की प्रशंसा सुनने वाले मनुष्य को काल भी नहीं छूता (भाव उस को मौत नहीं डरा सकती)।

**नानक भगता सदा विगासु ॥**
हे नानक! (प्रभु-नाम में चेतना लगाने वाले) भक्त जना के हृदय में सदा आनंद बना रहता है,

**सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥८॥**
प्रभु की प्रशंसा सुनने से (मनुष्य के) दुःख तथा पापों का नास हो जाता है ॥८॥

**सुणिऐ ईसरु बरमा इंदु ॥**
प्रभु की प्रशंसा सुनने से साधारण मनुष्य शिव, ब्रह्मा तथा इंद्र के पद ऊपर पहुंच जाता है,

**सुणिऐ मुखि सालाहण मंदु ॥**
प्रभु की प्रशंसा सुनने से मनुष्य मुंह से ईश्वर की प्रशंसा करने लगता है,

**सुणिऐ जोग जुगति तनि भेद ॥**
प्रभु की प्रशंसा सुनने से योग की तकनीक और शरीर के रहस्यों की समझा आ जाती है।

**सुणिऐ सासत सिम्रिति वेद ॥**
प्रभु की प्रशंसा सुनने से शास्त्र, स्मृति और वेदों के भाव की समझा आ जाती है।

**नानक भगता सदा विगासु ॥**
हे नानक! (नाम से प्रीत करने वाले) भक्त जना के हृदय में सदा आनंद बना रहता है।

**सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥९॥**
प्रभु की प्रशंसा सुनने से (मनुष्य के) दुखों तथा पापों का नाश हो जाता है ॥९॥

**सुणिऐ सतु संतोखु गिआनु ॥**
प्रभु की प्रशंसा सुनने से (हृदय में) अनन्त-सत्य, संतोष तथा प्रभु-ज्ञान प्रगट हो जाता है,

**सुणिऐ अठसठि का इसनानु ॥**
प्रभु की प्रशंसा सुनने से, मानो, अड़सठ तीरथों का स्नान (ही) हो जाता है (भाव, अड़सठ तीरथों के स्नान नाम जपने के में ही आ जाते हैं)।

**सुणिऐ पड़ि पड़ि पावहि मानु ॥**
प्रभु की प्रशंसा सुनने से मनुष्य वह विधि और सत्कार हासिल कर लेता हो जो बहुत विद्या प्राप्त करने से होता है।

**सुणिऐ लागै सहजि धिआनु ॥**
प्रभु की प्रशंसा सुनने से धैर्य वाला स्वभाव बन कर चित की चेतना टिक जाती है।

**नानक भगता सदा विगासु ॥**
हे नानक! (प्रभु-नाम में चेतना लगाने वाले) भक्त जना के हृदय में सदा आनंद बना रहता है,

**सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥१०॥**
परमात्मा की प्रशंसा सुनने से (मनुष्य के) दुःख तथा पापों का नास हो जाता है ॥१० ॥

**सुणिऐ सरा गुणा के गाह ॥**
प्रभु की प्रशंसा सुनने से (साधारण) मनुष्य अनेक गुणों की सूझ वाले हो जाते हैं,

**सुणिऐ सेख पीर पातिसाह ॥**
प्रभु की प्रशंसा सुनने से मनुष्य शेख, पीर तथा बादशाहों की पदवी प्राप्त कर लेते हैं।

**सुणिऐ अंधे पावहि राहु ॥**
प्रभु की प्रशंसा सुनने से ज्ञान-हीन (अंधे) मनुष्य भी (परमात्मा को मिलने का) आध्यात्मिक-राह भाल लेते हैं।

**सुणिऐ हाथ होवै असगाहु ॥**
प्रभु की प्रशंसा सुनने से मनुष्य को अपार प्रभु की असलियत समझ आ जाती है।

**नानक भगता सदा विगासु ॥**
हे नानक! (प्रभु-नाम में चेतना लगाने वाले) भक्त जना के हृदय में सदा आनंद बना रहता है,

**सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥११॥**
परमात्मा का नाम सुनने से (मनुष्य के) दुःख तथा पापों का नास हो जाता है ॥११ ॥

**मंने की गति कही न जाइ ॥**
प्रभु-नाम से मन संतुष्ट होने से मनुष्य (जिस की लगन नाम में लगी हुई है) की (ऊंची) आत्मिक अवस्था बतायी नहीं जा सकती।

**जे को कहै पिछै पछुताइ ॥**
अगर कोई मनुष्य बयान करे भी तो वह बाद में पछताता है (कि मैं ओछा जतन किया है)।

**कागदि कलम न लिखणहारु ॥**
(नाम में) पसीजे हुए की आत्मिक अवस्था कागज़ ऊपर कलम से कोई मनुष्य लिखने के सामर्थ्यवान नहीं है,

**मंने का बहि करनि वीचारु ॥**
(बेशक, मनुष्य) प्रभु-नाम से मन संतुष्ट होने वाले का मिल के अंदाज़ा लाने बाबत विचार (ज़रूर) करते हों।

**ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥**
परमात्मा का नाम बहुत पवित्र है (माया के प्रभाव से परे है),

**जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१२॥**
अगर कोई मनुष्य आप के अन्दर लगन ला के देखे ॥१२॥

**मंनै सुरति होवै मनि बुधि ॥**
प्रभु-नाम से मन संतुष्ट होने से मनुष्य की चेतना ऊंची हो जाती है, उस के मन में जाग्रत आ जाती है (भाव, माया में सोता हुआ मन जाग पड़ता है)।

**मंनै सगल भवण की सुधि ॥**
प्रभु-नाम से मन संतुष्ट होने से मनुष्य को सब भवनों की समझ हो जाती है (कि हर जगह प्रभु व्यापक है।)

**मंनै मुहि चोटा ना खाइ ॥**
प्रभु-नाम से मन संतुष्ट होने से मनुष्य को (संसार के विकारों की) चोटों मुंह ऊपर नहीं लगती (भाव, संसारी विकार उस ऊपर दबा नहीं डाल सकते),

**मंनै जम कै साथि न जाइ ॥**
प्रभु-नाम से मन संतुष्ट होने वाले मनुष्य को यमदूतों के साथ जाने का वाह नहीं पड़ता (भाव, वह जनम मरने के चक्र में से बच जाता है)।

**ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥**
परमात्मा का नाम बहुत पवित्र है (माया के प्रभाव से परे है),

**जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१३॥**
अगर कोई मनुष्य आप के अन्दर लगन ला के देखे ॥१३॥

**मंनै मारगि ठाक न पाइ ॥**
प्रभु-नाम से मन संतुष्ट होने से मनुष्य को जीवन के (सही) सफ़र में कोई रोक नहीं पड़ती।

**मंनै पति सिउ परगटु जाइ ॥**
प्रभु-नाम से मन संतुष्ट होने से मनुष्य (संसार में) शोभा प्राप्त करने बाले बन जाते हैं।

**मंनै मगु न चलै पंथु ॥**
प्रभु-नाम से मन संतुष्ट होने से मनुष्य (दुनिया के अलग-अलग) धार्मिक मज़हबों के कथित रास्तों ऊपर नहीं चलता (उस की सोच इन सभी से ऊपर हो जाती है)।

**मंनै धरम सेती सनबंधु ॥**
प्रभु-नाम से मन संतुष्ट होने से मनुष्य का असली धर्म से संबंध बन जाता है।

**ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥**
परमात्मा का नाम जो माया के प्रभाव से दूर है, बहुत पवित्र है,

**जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१४॥**
अगर कोई मनुष्य आप के मन में हरि-नाम की लगन पैदा कर ले ॥१४॥

**मंनै पावहि मोखु दुआरु ॥**
प्रभु-नाम से मन संतुष्ट होने से मनुष्य 'बुराई' से रिहाई पाने का राह भाल लेते हैं।

**मंनै परवारै साधारु ॥**
प्रभु-नाम से मन संतुष्ट होने से मनुष्य आप के परिवार को भी अच्छे रास्ते पर ले जाते हैं।

**मंनै तरै तारे गुरु सिख ॥**
प्रभु-नाम से मन संतुष्ट होने से ही, सतगुरु (संसार-सागर से) सिखों को पार ले जाता है।

**मंनै नानक भवहि न भिख ॥**
प्रभु-नाम से मन संतुष्ट होने से, हे नानक! मनुष्य दूसरों की अधीनता नहीं करते फिरते।

**ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥**
परमात्मा का नाम जो माया के प्रभाव से दूर है, बहुत पवित्र है,

**जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१५॥**
अगर कोई मनुष्य आप के मन में हरि-नाम की लगन पैदा कर ले ॥१५॥

**पंच परवाण पंच परधानु ॥**
(प्रभु-नाम से चेतना लगाने वाले) प्रभु को स्वीकृत हो जाते हैं और दूसरों के रहनुमा बन जाते हैं,

**पंचे पावहि दरगहि मानु ॥**
स्वीकृत मनुष्य परमात्मा की दरगाह में भी आदर प्राप्त करते हैं।

**पंचे सोहहि दरि राजानु ॥**
स्वीकृत मनुष्य राज-दरबारों में भी शोभते हैं।

**पंचा का गुरु एकु धिआनु ॥**
स्वीकृत मनुष्यों का गुरु प्रभू-नाम से ध्यान लगाना है।

**जे को कहै करै वीचारु ॥**
बेशक कोई कथन कर देखे तथा विचार कर ले,

**करते कै करणै नाही सुमारु ॥**
परमात्मा की कुदरत का कोई लेखा ही नहीं (भाव, अंत नहीं पड़ सकता)।

**धौलु धरमु दइआ का पूतु ॥**
प्रभु का धर्म-रूप नियम ही काल्पनिक-बैल है (जिस ने धरती को उठाकर रखा है) और यह (प्रभु की) दया का पुत्र है।

**संतोखु थापि रखिआ जिनि सूति ॥**
इस धर्म ने अपनी मर्यादा अनुसार संतोष को जनम दिया है।

**जे को बुझै होवै सचिआरु ॥**
अगर कोई मनुष्य (इस ऊपर कही हुई विचार को) समझ ले, तो वह सही माना जाता है।

**धवलै उपरि केता भारु ॥**
(नहीं तो, खयाल तो करो कि) बैल ऊपर धरती का कितना ही अनेक भार है,

**धरती होरु परै होरु होरु ॥**
धरती तो आगे से आगे बहुत हैं,

**तिस ते भारु तलै कवणु जोरु ॥**
इन सब धरती को कौन सी ताकत का सहारा होगा?

**जीअ जाति रंगा के नाव ॥**
(सृष्टि में) कई ज़ातों के, कई भांति के और कई नामों के जीव हैं।

**सभना लिखिआ वुड़ी कलाम ॥**
यह सभी परमात्मा की चलती हुई कलम (हुक्म) का प्रमाण हैं।

**एहु लेखा लिखि जाणै कोइ ॥**
कौन जानता है कि इस खाते को कैसे लिखना है?

**लेखा लिखिआ केता होइ ॥**
बस कल्पना कीजिए कि यह खाता कितना बड़ा होगा!

**केता ताणु सुआलिहु रूपु ॥**
परमात्मा का अनेक बल है, अनेक सुंदर रूप है,

**केती दाति जाणै कौणु कूतु ॥**
अनेक उस की दाति है। इस का कौन अंदाज़ा ला सकता है?

**कीता पसाउ एको कवाउ ॥**
(परमात्मा ने) आप के हुक्म से सारा संसार बना दिया,

**तिस ते होए लख दरीआउ ॥**
उस हुक्म से ही लाखों दरिया बन गए।

**कुदरति कवण कहा वीचारु ॥**
(सो) हमारी क्या ताकत है कि (कर्तार की कुदरत की) विचार कर सकूं?

**वारिआ न जावा एक वार ॥**
(हे परमात्मा!) मैं तो तुम्हारे ऊपर से एक बारी भी सदके होने योग्य नहीं हूँ (भाव, मेरी सत्ता बहुत ही तुच्छ है।)

**जो तुधु भावै साई भली कार ॥**
जो तुझ को अच्छा लगता है, वही काम ठीक है (भाव, तुझ की रज़ा में रहना ही ठीक है)।

**तू सदा सलामति निरंकार ॥१६॥**
हे निराकार भगवान! आप सदा अटल रहने वाला हैं ॥१६॥

**असंख जप असंख भाउ ॥**
अनगिनत जपने के और अनगिनत प्रभु से प्यार लगाने के साधन हैं।

**असंख पूजा असंख तप ताउ ॥**
अनगिनत पूजा करने के और अनगिनत तप साधने के तरीके हैं।

**असंख गरंथ मुखि वेद पाठ ॥**
अनेक धार्मिक पुस्तकों हैं और वेदों के अनेक पाठ मुंह से बोले जाते हैं।

**असंख जोग मनि रहहि उदास ॥**
योग के साधन करने वाले अनेक मनुष्य मन में (माया से) उदासीन रहते हैं।

**असंख भगत गुण गिआन वीचार ॥**
अनगिनत भक्त हैं, जो परमात्मा के गुणों और ज्ञान की विचार कर रहे हैं,

**असंख सती असंख दातार ॥**
अनेक ही आत्म-संयमी पुरुष तथा दाता हैं।

**असंख सूर मुह भख सार ॥**
अनेक शूरवीर हैं जो आपने मुंहों ऊपर शास्त्रों के वार सहते हैं।

**असंख मोनि लिव लाइ तार ॥**
अनेक ही मौनी हैं, जो लगातार चेतना जोड़ के बैठ रहे हैं (और बोलते नहीं)।

**कुदरति कवण कहा वीचारु ॥**
हमारी क्या ताकत है कि कर्तार की कुदरत की विचार कर सकूं।

**वारिआ न जावा एक वार ॥**
(हे परमात्मा!) मैं तो तुम्हारे ऊपर से एक बारी भी सदके होने योग्य नहीं हूँ (भाव, मेरी सत्ता बहुत ही तुच्छ है।)

**जो तुधु भावै साई भली कार ॥**
जो तुझ को अच्छा लगता है वही काम ठीक है (भाव, तुझ की रज़ा में रहना ही ठीक है)।

**तू सदा सलामति निरंकार ॥१७॥**
हे निराकार भगवान! आप सदा अटल रहने वाला हैं ॥१७॥

**असंख मूरख अंध घोर ॥**

अनगिनत मूर्ख, अज्ञानता से अंधे हैं।

**असंख चोर हरामखोर ॥**

अनेक ही चोर हैं, जो पराया माल (चुरा-चुरा के) इस्तेमाल कर रहे हैं।

**असंख अमर करि जाहि जोर ॥**

अनगिनत लोग अपनी इच्छा को बलपूर्वक दूसरों पर थोपते हुए (इस दुनिया से) चले जाते हैं।

**असंख गलवढ हतिआ कमाहि ॥**

अनेक ही खूनी मनुष्य लोगों के गले काट रहे हैं।

**असंख पापी पापु करि जाहि ॥**

और अनेक ही पापी मनुष्य पाप कमा के (इस दुनिया से) चले जाते हैं।

**असंख कूड़िआर कूड़े फिराहि ॥**

अनेक ही झूठ बोलने के स्वभाव वाले मनुष्य झूठ में ही व्यस्त पड़े हैं

**असंख मलेछ मलु भखि खाहि ॥**

अनगिनत पापी पाप की गंदगी खा रहे हैं।

**असंख निंदक सिरि करहि भारु ॥**

अनेक ही निंदा करने वाले (निंदा कर के) आप के सिर ऊपर (निंदा का) भार उठा रहे हैं।

**नानकु नीचु कहै वीचारु ॥**

नीच नानक यह (ऊपर वाली) विचार पेश करता है।

**वारिआ न जावा एक वार ॥**

(हे परमात्मा!) मैं तो तुम्हारे ऊपर से एक बारी भी सदके होने योग्य नहीं हूँ (भाव, हमारी सत्ता बहुत ही तुच्छ है।)

**जो तुधु भावै साई भली कार ॥**

जो तुझ को अच्छा लगता है, वही काम ठीक है (भाव, तुझ की रज़ा में रहना ही ठीक है)।

**तू सदा सलामति निरंकार ॥१८॥**

हे निराकार भगवान! आप सदा-स्थिर रहने वाला हैं ॥१८॥

**असंख नाव असंख थाव ॥**

(कुदरत के अनेक जीवों तथा और अनेक पदार्थों के) असंख्य ही नाम हैं तथा असंख्य ही (उस के) जगह टिकाने हैं।

**अगंम अगंम असंख लोअ ॥**

(कुदरत में) असंख्य ही मण्डल हैं जिस तक मनुष्य की पहुंच ही नहीं हो सकती।

**असंख कहहि सिरि भारु होइ ॥**

(कुदरत का लेखा बताने के लिये) 'असंख्य' कहने से भी सिर ऊपर भार होता है (भाव, बताना मुश्किल है)।

**अखरी नामु अखरी सालाह ॥**

परमात्मा का नाम भी अक्षरों के द्वारा ही (लिया जा सकता है), उस की प्रशंसा भी अक्षरों के द्वारा ही की जा सकती है।

**अखरी गिआनु गीत गुण गाह ॥**

परमात्मा का ज्ञान, उसके गीत और गुणों की जानकारी भी अक्षरों के द्वारा ही हो सकती है।

**अखरी लिखणु बोलणु बाणि ॥**

बोली का लिखना तथा बोलना भी अक्षरों के द्वारा ही बताया जा सकता है।

**अखरा सिरि संजोगु वखाणि ॥**

अक्षरों के द्वारा ही अच्छी किस्मत का संयोग बयान किया जा सकता है,

**जिनि एहि लिखे तिसु सिरि नाहि ॥**

जिस परमात्मा ने (जीवों के संयोग के) यह अक्षर लिखे हैं, उस के सिर ऊपर कोई लेख कहीं है (भाव, उस का लेखा नहीं हो सकता)।

**जिव फुरमाए तिव तिव पाहि ॥**

जिस-जिस तरह वह परमात्मा हुक्म करता है उसी तरह जीव (अपने आप के संयोग) भोगते हैं।

**जेता कीता तेता नाउ ॥**

यह सारा संसार, जो परमात्मा ने बना रखा है, यह उस के नाम का स्वरूप है।

**विणु नावै नाही को थाउ ॥**

प्रभु-नाम (प्रभु-हस्ती) के बगैर कोई जगह नहीं है।

**कुदरति कवण कहा वीचारु ॥**
हमारी क्या ताकत है कि कर्तार की कुदरत की विचार कर सकूं?

**वारिआ न जावा एक वार ॥**
(हे परमात्मा!) मैं तो तुम्हारे से एक बारी भी सदके होने योग्य नहीं हूँ (भाव, मेरी सत्ता बहुत ही तुच्छ है)।

**जो तुधु भावै साई भली कार ॥**
जो तुझ को अच्छा लगता है, वही काम ठीक है, (भाव, तुझ की रज़ा में रहना ही ठीक है)।

**तू सदा सलामति निरंकार ॥१९॥**
हे निराकार भगवान! आप सदा स्थिर रहने वाला हैं ॥१९॥

**भरीऐ हथु पैरु तनु देह ॥**
अगर हाथ या पैर या काय मलिन हो जाये,

**पाणी धोतै उतरसु खेह ॥**
तो पानी से धोने से वह मैल उतर जाती है।

**मूत पलीती कपड़ु होइ ॥**
अगर (कोई) कपड़ा मूत्र से मैला हो जाये,

**दे साबूणु लईऐ ओहु धोइ ॥**
तो साबुन ला के उस को धो लिया जाता है।

**भरीऐ मति पापा कै संगि ॥**
(परन्तु) अगर (मनुष्य की) बुद्धि पापों से मलीन हो जाये,

**ओहु धोपै नावै कै रंगि ॥**
तो वह पाप परमात्मा के नाम से प्यार करने से ही धोया जा सकता है।

**पुंनी पापी आखणु नाहि ॥**
हे नानक! पुण्य या पाप केवल कहने की बातें नहीं हैं।

**करि करि करणा लिखि लै जाहु ॥**
मनुष्य जैसे कर्म करेगा वैसे ही संस्कार उस के अन्दर दर्ज होने से वह साथ ले जाएगा।

**आपे बीजि आपे ही खाहु ॥**
जो कुछ आप बोयेगा, उस का फल आप ही प्राप्त करेगा।

**नानक हुकमी आवहु जाहु ॥२०॥**
(किए हुए कर्मों के अनुसार) मनुष्य परमात्मा के हुक्म में जनम मरने के चक्र में पड़ा रहेगा ॥२०॥

**तीरथु तपु दइआ दतु दानु ॥**
तीरथ जात्रा, तप क्रिया की साधना, (जीवों पर) दया, दिये हुए दान (इन कर्मों) के बजाय;

**जे को पावै तिल का मानु ॥**
अगर किसे मनुष्य को कोई बड़ाई मिल भी जाये, तो बहुत कम मिलती है।

**सुणिआ मंनिआ मनि कीता भाउ ॥**
प्रभु की प्रशंसा सुन के और प्रभु-नाम से संतुष्ट हो कर उस से प्यार बना कर,

**अंतरगति तीरथि मलि नाउ ॥**
इस तरह अपने आप के अंदर के तीरथ में मल-मल के स्नान कर।

**सभि गुण तेरे मै नाही कोइ ॥**
(हे प्रभु!) सब गुण तेरे हैं, वरना मेरे पास कुछ भी नहीं है।

**विणु गुण कीते भगति न होइ ॥**
गुण के बिना, कोई भक्ति पूजा नहीं हो सकती।

**सुअसति आथि बाणी बरमाउ ॥**
(हे भगवान!) तुझ की सदा जय हो! तुम आप ही माया हैं, तुम आप ही वाणी हैं, तुम आप ही ब्रह्मा हैं।

**सति सुहाणु सदा मनि चाउ ॥**
तुम सदा-स्थिर हैं, सुन्दर हैं, तुम्हारे मन में सदा आनंद है।

**कवणु सु वेला वखतु कवणु कवण थिति कवणु वारु ॥**
कौन सा वह समय तथा वक्त था, कौन सी थिति थी, कौन सा दिन था,

**कवणि सि रुती माहु कवणु जितु होआ आकारु ॥**
कौन सी वह ऋतु थी और कौन सा वह महीना था, जब यह संसार बना था?

**वेल न पाईआ पंडती जि होवै लेखु पुराणु ॥**

(संसार बनने का) वक्त पंडितों को पता नहीं, अगर पता होता तो पुराणों में लिखा हुआ होता।

**वखतु न पाइओ कादीआ जि लिखनि लेखु कुराणु ॥**

(संसार बनने के) वक्त की काज़ी लोगों को भी ख़बर ना लग सकी, नहीं तो वह कुरान में लिखा जाता।

**थिति वारु ना जोगी जाणै रुति माहु ना कोई ॥**

(जब जगत बना था तब) कौन सी थिति थी, (कौन सा) वार था, यह बात कोई योगी भी नहीं जानता ओर कौन सी ऋतु थी और कौन सा महीना था भी कोई नहीं जानता।

**जा करता सिरठी कउ साजे आपे जाणै सोई ॥**

जो सिरजनहार यह जगत को पैदा करता है, वह आप ही जानता है (कि जगत कब रचा गया)।

**किव करि आखा किव सालाही किउ वरनी किव जाणा ॥**

मैं किस तरह (परमात्मा की बड़ाई) बताऊँ, किस तरह परमात्मा की प्रशंसा करूं, किस तरह वर्णन करूं और किस तरह समझ सकूं?

**नानक आखणि सभु को आखै इक दू इकु सिआणा ॥**

हे नानक! हरेक जीव आप ही आप को दूजे से सयाना समझ के (परमात्मा की बड़ाई) बताने का जतन करता है, (परन्तु बता नहीं सकता)।

**वडा साहिबु वडी नाई कीता जा का होवै ॥**

परमात्मा (सब से) बड़ा है, उस की बड़ाई ऊंची है। जो कुछ जगत में हो रहा है, उसे का किया हो रहा है।

**नानक जे को आपौ जाणै अगै गइआ न सोहै ॥२१॥**

हे नानक! जो सब कुछ जानने का दावा करता है, वह परमात्मा के द्वार ऊपर जा कर आदर नहीं प्राप्त करता ॥२१॥

**पाताला पाताल लख आगासा आगास ॥**

(वेदों अनुसार) पाताल के नीचे और लाखों पाताल हैं और आकाश के ऊपर और लाखों आकाश हैं,

**ओड़क ओड़क भालि थके वेद कहनि इक वात ॥**

यह वेदों में लिखा हुआ है कि आखिरी सीमा की भाल करके (अनेक ऋषि मौनी) थक गए हैं, (परन्तु भाल नहीं सके)।

**सहस अठारह कहनि कतेबा असुलू इकु धातु ॥**
(मुसलमान तथा ईसाई आदि की चारे) पुस्तकें कहती हैं, कि कुल अठारह हज़ार आलम हैं, जिन का आरम्भ एक परमात्मा है।

**लेखा होइ त लिखीऐ लेखै होइ विणासु ॥**
परमात्मा की कुदरत का लेखा तब ही लिख सकते हैं, अगर लेखा हो सके। लेखा लिखते ही मनुष्य खत्म हो जाता है (और लिखा नहीं जा सकता)।

**नानक वडा आखीऐ आपे जाणै आपु ॥२२॥**
हे नानक! जिस परमात्मा को महान कहा जा रहा है, वह आप ही आप को (आप की बड़ाई को) जानता है ॥२२॥

**सालाही सालाहि एती सुरति न पाईआ ॥**
प्रशंसा-योग्य परमात्मा की शोभा कह-कह के किसे मनुष्य ने इतनी समझ नहीं पाई कि परमात्मा कितना महान है।

**नदीआ अतै वाह पवहि समुंदि न जाणीअहि ॥**
नदियाँ और नाले समुद्र में बहते हैं मगर वह इसकी विशालता को नहीं जानते।

**समुंद साह सुलतान गिरहा सेती मालु धनु ॥**
समुंदरों के बादशाह तथा सुलतान (जिस के खजानों में) पहाड़ जैसे धन पदार्थों हों,

**कीड़ी तुलि न होवनी जे तिसु मनहु न वीसरहि ॥२३॥**
ये एक चींटी के बराबर भी नहीं हैं, उसकी तुलना में जो परमेश्वर को नहीं भूलता है ॥२३॥

**अंतु न सिफती कहणि न अंतु ॥**
(परमात्मा के) गुणों की कोई सीमा नहीं है, गिनने/कहने से भी (गुणों का) अंत नहीं पड़ सकता (गिने नहीं जा सकते)।

**अंतु न करणै देणि न अंतु ॥**
परमात्मा की रचना तथा रहमतों का अंत नहीं पड़ सकता।

**अंतु न वेखणि सुणणि न अंतु ॥**
देखने तथा सुनने से भी उस के गुणों का अंत नहीं प्राप्त कर सकते।

**अंतु न जापै किआ मनि मंतु ॥**
उसकी सीमाओं को नहीं जाना जा सकता है और यह भी नहीं जाना जा सकता कि परमात्मा के मन में कौन बात है।

**अंतु न जापै कीता आकारु ॥**
परमात्मा ने यह जगत बना रखा है, परन्तु इस का अंत नहीं पाया जा सकता।

**अंतु न जापै पारावारु ॥**
इस का इधर का तथा उधर का किनारा कोई नहीं दिखता।

**अंत कारणि केते बिललाहि ॥**
कई मनुष्य परमात्मा का सीमा खोजने के लिए व्याकुल होते हैं,

**ता के अंत न पाए जाहि ॥**
परन्तु उस की सीमा नहीं मिल सकती,

**एहु अंतु न जाणै कोइ ॥**
इस सीमा को कोई मनुष्य नहीं जान कर सकता।

**बहुता कहीऐ बहुता होइ ॥**
जितना भी महान कहा जाए उतना ही और महान प्रतीत होने लग जाता है,

**वडा साहिबु ऊचा थाउ ॥**
मालिक परमात्मा महान है, उस का टिकाना ऊँचा है,

**ऊचे उपरि ऊचा नाउ ॥**
उस का नाम उस से भी ऊँचा है।

**एवडु ऊचा होवै कोइ ॥**
अगर कोई उस प्रभु जैसा महान हो,

**तिसु ऊचे कउ जाणै सोइ ॥**
तभी वह ही उस ऊंचे परमात्मा को समझ सकता है (कि वह कितना महान है)।

**जेवडु आपि जाणै आपि आपि ॥**
परमात्मा आप ही जानता है कि वह आप कितना महान है।

**नानक नदरी करमी दाति ॥२४॥**

हे नानक! (हरेक) दाति मेहर की नज़र करने वाले परमात्मा की कृपा से मिलती है ॥२४॥

**बहुता करमु लिखिआ ना जाइ ॥**

परमात्मा की कृपा इतनी उत्तम है कि लिखने में लाई नहीं जा सकती।

**वडा दाता तिलु न तमाइ ॥**

वह बड़ी रहमतों देने वाला है, उस को रता भी लालच नहीं।

**केते मंगहि जोध अपार ॥**

अनेक शूरवीर (परमात्मा के द्वार ऊपर) माँग रहे हैं,

**केतिआ गणत नही वीचारु ॥**

और (मांगने वाले) कई और ऐसे हैं, जिस के हिसाब परन्तु विचार नहीं हो सकता।

**केते खपि तुटहि वेकार ॥**

कई जीव विकारों में (ही) खप-खप के नास होते हैं।

**केते लै लै मुकरु पाहि ॥**

अनेक जीव (परमात्मा के द्वार से पदार्थ) प्राप्त कर के मुकर जाते हैं (भाव, देने वाले प्रभु का कभी शुक्र नहीं करते)।

**केते मूरख खाही खाहि ॥**

अनेक मूरख (पदार्थ ले के) खाए ही जाते हैं (परन्तु दातार को चेते नहीं रखते)।

**केतिआ दूख भूख सद मार ॥**

अनेक जीवों को सदा मार, क्लेश और भूख ही मिलते हैं।

**एहि भि दाति तेरी दातार ॥**

(परन्तु) हे देने वाला परमात्मा! यह भी तुझ की ही कृपा/रज़ा है।

**बंदि खलासी भाणै होइ ॥**

(माया के मोह) बंधन से छुटकारा परमात्मा की रज़ा में चलने से ही होता है।

**होरु आखि न सकै कोइ ॥**

इस बारे में किसी और का कोई कहना नहीं चलता।

**जे को खाइकु आखणि पाइ ॥**
(परन्तु) यदि कोई मूर्ख यह कहे कि उस का कहना चलता है,

**ओहु जाणै जेतीआ मुहि खाइ ॥**
तो वही जानता है जितनी चोटों वह (मूर्खता के कारण) आप के मुंह ऊपर खाता है (भाव, पछताता है)।

**आपे जाणै आपे देइ ॥**
परमात्मा आप ही (जीवों की ज़रूरतें) जानता है तथा आप ही (वरदान) देता है,

**आखहि सि भि केई केइ ॥**
बहुत कम, बहुत कम लोग हैं जो इस बात को स्वीकार करते हैं।

**जिस नो बखसे सिफति सालाह ॥**
हे नानक! जिस मनुष्य को परमात्मा अपनी प्रशंसा का वरदान देता है,

**नानक पातिसाही पातिसाहु ॥२५॥**
हे नानक, वह बादशाहों का बादशाह बन जाता है (भाव, प्रभु की प्रशंसा करना ही सब से ऊंची दाति है) ॥२५॥

**अमुल गुण अमुल वापार ॥**
(परमात्मा के) गुण अनमोल हैं और इन गुणों का व्यापार/व्यवहार करना भी अनमोल हैं।

**अमुल वापारीए अमुल भंडार ॥**
(गुणों के) वह व्यापार/व्यवहार करने वाले भी अनमोल हैं, (गुणों के) ख़ज़ाने (भी) अनमोल हैं।

**अमुल आवहि अमुल लै जाहि ॥**
अमूल्य वे हैं जो उसके पास आते हैं, अमूल्य वे हैं जो उससे गुण ले जाते हैं।

**अमुल भाइ अमुला समाहि ॥**
जो मनुष्य परमात्मा से प्रेम करते हैं और जो उस में लीन हो चुके हैं, वह भी अनमोल हैं।

**अमुलु धरमु अमुलु दीबाणु ॥**
परमात्मा के कानून तथा राज-दरबार अनमोल हैं।

**अमुलु तुलु अमुलु परवाणु ॥**
वह तराजू अनमोल है और वह (तोलने वाले) वजन अनमोल हैं (जिस से प्रभु जीवों के कामों को तोलता है)।

**अमुलु बखसीस अमुलु नीसाणु ॥**
उस की आशीष के निशान भी अनमोल हैं।

**अमुलु करमु अमुलु फुरमाणु ॥**
परमात्मा का वरदान तथा हुक्म भी अमूल्य है,

**अमुलो अमुलु आखिआ न जाइ ॥**
अमूल्य ही अमूल्य जिस को बताया नहीं जा सकता।

**आखि आखि रहे लिव लाइ ॥**
उसके (प्रभु के) बारे में विचार करो, और उसके प्रेम में लगातार लीन रहो।

**आखहि वेद पाठ पुराण ॥**
वेदों के मंतर तथा पुराण परमात्मा का अंदाज़ा लाते हैं।

**आखहि पड़े करहि वखिआण ॥**
विद्वान मनुष्य (उपदेश देने वाले) भी (परमात्मा को) बयान करते हैं।

**आखहि बरमे आखहि इंद ॥**
कई ब्रह्मा, कई इंद्र परमात्मा को बयान करते हैं।

**आखहि गोपी तै गोविंद ॥**
गोपी तथा कई कान्हा परमात्मा को बयान करते हैं।

**आखहि ईसर आखहि सिध ॥**
कई शिव तथा सिद्ध लोग परमात्मा को बयान करते हैं।

**आखहि केते कीते बुध ॥**
परमात्मा के पैदा किए हुए अनेक बुद्धि उस को बयान करते हैं।

**आखहि दानव आखहि देव ॥**
राक्षस तथा देवता (भी) परमात्मा को बयान करते हैं।

**आखहि सुरि नर मुनि जन सेव ॥**
देवता जैसा मनुष्य, मौनी लोग तथा सेवक परमात्मा को बयान करते हैं।

**केते आखहि आखणि पाहि ॥**

बहुत से लोग (प्रभु का) वर्णन करते हैं और उसका वर्णन करने की कोशिश करते हैं।

**केते कहि कहि उठि उठि जाहि ॥**

बहुत लोगों ने उसके बारे में बार-बार वर्णन किया है, और फिर उठ-उठ कर चले जाते हैं।

**एते कीते होरि करेहि ॥**

जगत में इतने (अनेक) जीव पैदा किए हुए हैं (जो बयान कर रहे हैं), अगर तुम और भी पैदा कर दें,

**ता आखि न सकहि केई केइ ॥**

तो भी जीव तुझ को बयान नहीं कर सकते।

**जेवडु भावै तेवडु होइ ॥**

हे नानक! परमात्मा जितना चाहता है उतना ही महान हो जाता है (अपनी कुदरत बड़ा लेता है)।

**नानक जाणै साचा सोइ ॥**

वह सत्य (सदा-स्थिर रहने वाला) प्रभु आप ही जानता है (कि वह कितना महान है)।

**जे को आखै बोलुविगाड़ु ॥**

अगर कोई बड़बोला मनुष्य बताने लगे (कि परमात्मा कितना महान है)

**ता लिखीऐ सिरि गावारा गावारु ॥२६॥**

तो वह मनुष्य मूरखों में मूरख गिना जाता है ॥२६॥

**सो दरु केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब समाले ॥**

वह द्वार कहाँ है, और वह निवास कहाँ है, जिसमें तुम बैठते हो और सभी की देखभाल करते हो?

**वाजे नाद अनेक असंखा केते वावणहारे ॥**

(तुझ की यह रची हुई कुदरत में) अनेक तथा अनगिनत बाजे तथा राग हैं; अनेक ही जीव (उस बाजे को) बजाने वाले हैं।

**केते राग परी सिउ कहीअनि केते गावणहारे ॥**

रागनीएं समेत अनेक ही राग कहे जाते हैं और अनेक ही जीव (इन रागों के) गाने वाले हैं (जो तुझ को गा रहे हैं)!

**गावहि तुहनो पउणु पाणी बैसंतरु गावै राजा धरमु दुआरे ॥**
(हे भगवान!) पवन, पानी, अग्नि तुम्हारे गुण गा रहे हैं। धर्मराज तुम्हारे द्वार ऊपर तुझ की प्रशंसा कर रहा है।

**गावहि चितु गुपतु लिखि जाणहि लिखि लिखि धरमु वीचारे ॥**
वह चितर-गुप्त भी जो (जीवों के बुरे कर्मों का हिसाब) लिखने जानते हैं, और जिस के लिखे हुए को धर्मराज विचारता है, आप की शोभा कर रहे हैं।

**गावहि ईसरु बरमा देवी सोहनि सदा सवारे ॥**
(हे परमात्मा!) देवी, शिव तथा ब्रह्मा, जो तुम्हारे संवारे हुए हैं, तुझ को गा रहे हैं।

**गावहि इंद इदासणि बैठे देवतिआ दरि नाले ॥**
कई इंद्र तख़्त पर बैठे हुए देवता समेत तुम्हारे द्वार ऊपर तुझ को गा रहे हैं।

**गावहि सिध समाधी अंदरि गावनि साध विचारे ॥**
सिद्ध लोग समाधि ला के तुझ को गा रहे हैं, साधु विचार कर-कर के तुझ को गा रहे हैं।

**गावनि जती सती संतोखी गावहि वीर करारे ॥**
लटों वाले, दान करने वाले तथा संतोष वाले पुरुष तुम्हारे गुण गा रहे हैं और (अनेक) बहादुर शूरवीर आप की शोभा कर रहे हैं।

**गावनि पंडित पड़नि रखीसर जुगु जुगु वेदा नाले ॥**
(हे परमात्मा!) पंडित तथा महा-ऋषि जो (वेदों को) पढ़ते हैं, वेदों समेत तुझ को गा रहे हैं।

**गावहि मोहणीआ मनु मोहनि सुरगा मछ पइआले ॥**
सुंदर स्त्रियों, जो स्वर्ग, मात-लोग तथा पाताल में (भाव, हर जगह) मनुष्य के मन को मोह लेती हैं, तुझ को गा रही हैं।

**गावनि रतन उपाए तेरे अठसठि तीरथ नाले ॥**
(हे भगवान!) तुम्हारे पैदा किए हुए रतन अड़सठ तीरथों समेत तुझ को गा रहे हैं।

**गावहि जोध महाबल सूरा गावहि खाणी चारे ॥**
बड़े बल वाले जोधा तथा शूरवीर तुझ की महिमा कर रहे हैं। चारों ही जीवन के स्रोतों के जीव जंतु तुझ को गा रहे हैं।

**गावहि खंड मंडल वरभंडा करि करि रखे धारे ॥**
सारी सृष्टि, सृष्टि के सब खंड और चक्कर, जो तुम पैदा कर के टिका रखे हैं, तुझ को गा रहे हैं।

**सेई तुधुनो गावहि जो तुधु भावनि रते तेरे भगत रसाले ॥**
(हे परमात्मा!) तुझ को अच्छे लगने वाले मस्त भक्त जन तुम्हारे प्रेम के कारण तुझ को गा रहे हैं।

**होरि केते गावनि से मै चिति न आवनि नानकु किआ वीचारे ॥**
अनेक और जीव तुझ को गा रहे हैं, जो हम के सोचने में भी नहीं आ सकते। नानक (विचारा) क्या विचार कर सकता है?

**सोई सोई सदा सचु साहिबु साचा साची नाई ॥**
वह परमात्मा सदा-स्थिर (सत्य) है। वह मालिक सच्चा है, उस का नाम भी सत्य (सदा अटल) है।

**है भी होसी जाइ न जासी रचना जिनि रचाई ॥**
जिस परमात्मा ने यह सृष्टि पैदा की है, वह अभी मौजूद है और सदा रहेगा; ना वह जनमा है और ना ही मरेगा।

**रंगी रंगी भाती करि करि जिनसी माइआ जिनि उपाई ॥**
जिस परमात्मा ने कई रंगों, भांति और नमूने की माया रच रखी है।

**करि करि वेखै कीता आपणा जिव तिस दी वडिआई ॥**
सृष्टि की रचना करने के बाद, वह स्वयं, अपनी महानता के द्वारा इसकी देखभाल करता है।

**जो तिसु भावै सोई करसी हुकमु न करणा जाई ॥**
जो कुछ परमात्मा को अच्छा लगता है, वही ही करेगा, किसे जीव से परमात्मा आगे हुक्म नहीं किया जा सकता।

**सो पातिसाहु साहा पातिसाहिबु नानक रहणु रजाई ॥२७॥**
परमात्मा बादशाह है, बादशाहों का भी बादशाह है। नानक को उस की रज़ा में रहना ही अनुकूल है ॥२७॥

**मुंदा संतोखु सरमु पतु झोली धिआन की करहि बिभूति ॥**
(हे योगी!) अगर तुम संतोष को आप की बाली बनाए, मेहनत को मांगने का प्याला तथा झोली, और परमात्मा के ध्यान की राख (शरीर ऊपर मलें),

**खिंथा कालु कुआरी काइआ जुगति डंडा परतीति ॥**
मौत (का भय) तुझ का फटा हुआ बाना हो, काय को विकारों से बचा के रखना तुम्हारे लिए योग की रहित हो और श्रद्धा को डंडा बना लें,

**आई पंथी सगल जमाती मनि जीतै जगु जीतु ॥**
तथा सभी को सज्जन मित्र समझ कर अपने मन को जीतने से ही तुम सही 'आई पंथी' वाला बन सकता है तो ऐसे अपना मन को जीत कर समझो सारा जगत ही जीत सकता है।

**आदेसु तिसै आदेसु ॥**
मैं प्रभु को नमन करता हूँ, मैं प्रणाम करता हूँ।

**आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥२८॥**
प्रारंभिक एक, शुद्ध प्रकाश, शुरुआत के बिना, अंत के बिना, सभी युगों के दौरान, वह एक और एक ही है ॥२८॥

**भुगति गिआनु दइआ भंडारणि घटि घटि वाजहि नाद ॥**
आध्यात्मिक ज्ञान को भोजन-भंडारा बना, और करुणा को बाटने वाला सेवक। (प्रभु) नाद की ध्वनि-धारा प्रत्येक और हर दिल में चल रही है।

**आपि नाथु नाथी सभ जा की रिधि सिधि अवरा साद ॥**
तेरा नाथ आप परमात्मा हो, जिस के वश में सारी सृष्टि है, (योग के साधना के द्वारा प्राप्त हुई) चमत्कारी आध्यात्मिक शक्तियां (तो) किसे और तरफ ले जाने वाले स्वादिष्ट वस्तु हैं।

**संजोगु विजोगु दुइ कार चलावहि लेखे आवहि भाग ॥**
उसके साथ मिलन, और उससे अलग रहना, उसकी इच्छा से होता है। हम अपने भाग्य में जो लिखा है उसे प्राप्त करने के लिए आते हैं।

**आदेसु तिसै आदेसु ॥**
मैं प्रभु को नमन करता हूँ, मैं प्रणाम करता हूँ।

**आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥२९॥**
प्रारंभिक एक, शुद्ध प्रकाश, शुरुआत के बिना, अंत के बिना, सभी युगों के दौरान, वह एक और एक ही है ॥२९॥

**एका माई जुगति विआई तिनि चेले परवाणु ॥**
(लोगों में यह खयाल प्रचलित है कि) अकेली माया (किसे) युक्ति से प्रकट हुई और उस के तीन पुत्र जम पड़े।

**इकु संसारी इकु भंडारी इकु लाए दीबाणु ॥**

उस में एक (ब्रह्मा) रचयिता बन गया (भाव, जीवों को पैदा करने लगने लगा), एक (विष्णु) भंडारे का मालिक बन गया (भाव, जीवों को आहार पहुंचाने का काम करने लगा), और एक (शिव जो) कचहरी लगाता है (भाव, जीवों का विनाश करता है)।

**जिव तिसु भावै तिवै चलावै जिव होवै फुरमाणु ॥**

(परन्तु असली बात यह है कि) जैसे उस परमात्मा को अच्छा लगता है और जैसे उस का हुक्म होता है, ऐसे ही वह आप संसार की कार चला रहा है, (इन ब्रह्मा, विष्णु और शिव के हाथ कुछ नहीं)।

**ओहु वेखै ओना नदरि न आवै बहुता एहु विडाणु ॥**

यह बड़ा आश्चर्य कौतुक है कि वह परमात्मा (सब जीवों को) देख रहा है परन्तु जीवों को परमात्मा नहीं दिखता।

**आदेसु तिसै आदेसु ॥**

मैं प्रभु को नमन करता हूँ, मैं प्रणाम करता हूँ।

**आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥३०॥**

प्रारंभिक एक, शुद्ध प्रकाश, शुरुआत के बिना, अंत के बिना, सभी युगों के दौरान, वह एक और एक ही है ॥३० ॥

**आसणु लोइ लोइ भंडार ॥**

परमात्मा के भंडारों का टिकाना हरेक भवन में है (भाव, हरेक भवन में परमात्मा के भंडारे चल रहे हैं)।

**जो किछु पाइआ सु एका वार ॥**

जो कुछ (परमात्मा ने उस भंडारों में) पाया है एक बारी डाल दिया है, (भाव, उस के भंडारे सदा अमित हैं)।

**करि करि वेखै सिरजणहारु ॥**

सृष्टि को पैदा करने वाला परमात्मा (जीवों को) पैदा कर के (उस की) देख-भाल कर रहा है।

**नानक सचे की साची कार ॥**

हे नानक! सदा-स्थिर रहन वाले (सत्य परमात्मा) की (सृष्टि की संभाल वाली) यह कार सत्य (सदा अटल) है।

**आदेसु तिसै आदेसु ॥**

मैं प्रभु को नमन करता हूँ, मैं प्रणाम करता हूँ।

**आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥३१॥**
प्रारंभिक एक, शुद्ध प्रकाश, शुरुआत के बिना, अंत के बिना, सभी युगों के दौरान, वह एक और एक ही है ॥३१॥

**इक दू जीभौ लख होहि लख होवहि लख वीस ॥**
अगर एक जीभ से लाख जीभ हो जाएं, और लाख जीभों से बीस लाख बन जाएं,

**लखु लखु गेड़ा आखीअहि एकु नामु जगदीस ॥**
(इन बीस लाख जीभों से अगर) परमात्मा के एक नाम को एक इक लाख बारी कहें।

**एतु राहि पति पवड़ीआ चड़ीऐ होइ इकीस ॥**
परमात्मा को मिलने वाले रास्ते पर जाने के लिये जो सीढ़ी हैं, उस ऊपर आप-भाव गवा कर के ही चड़ सकते हैं और तभी मिलन होता है।

**सुणि गला आकास की कीटा आई रीस ॥**
(मानो, जैसे) आकाश की बातें सुन के चींटी को भी यह रीस आ गई है (कि हम भी आकाश पर पहुंच जाए)।

**नानक नदरी पाईऐ कूड़ी कूड़ै ठीस ॥३२॥**
हे नानक! अगर परमात्मा मेहर की नज़र करें तो ही उस को मिला जाता है, (नहीं तो) कूड़े (विकारी) मनुष्य की केवल झूठी घमंड है ॥३२॥

**आखणि जोरु चुपै नह जोरु ॥**
बोलने में तथा चुप रहने में भी हमारा कोई अपना इख़्तियार नहीं है।

**जोरु न मंगणि देणि न जोरु ॥**
ना ही मांगने में हमारी मन की इच्छा चलती है और ना ही देने में।

**जोरु न जीवणि मरणि नह जोरु ॥**
जीने में तथा मरने में भी हमारी कोई सामर्थ्य नहीं।

**जोरु न राजि मालि मनि सोरु ॥**
जिस कारण मन में घमंड होता है वह राज तथा माल के प्राप्त करने में भी हमारा कोई ज़ोर नहीं चलता।

**जोरु न सुरती गिआनि वीचारि ॥**
आत्मिक ध्यान लगाने में (समाधि में), ज्ञान से विचार करने में भी हमारी सामर्थ्य नहीं है।

**जोरु न जुगती छुटै संसारु ॥**
उस युक्ति में रहने के लिए भी हमारा इख़्तियार नहीं है, जिस कर के दुनियावी-विकारों से छुटकारा हो जाता है।

**जिसु हथि जोरु करि वेखै सोइ ॥**
वही परमात्मा जिस के हाथ में ताकत है, रचना रच के (उस की हर प्रकार) देख-भाल करता है।

**नानक उतमु नीचु न कोइ ॥३३॥**
हे नानक! आप ही आप में ना कोई मनुष्य उत्तम है और ना ही नीच ॥३३॥

**राती रुती थिती वार ॥**
रातें, ऋतु, थिति और वार,

**पवण पाणी अगनी पाताल ॥**
हवा, पानी, आग और पाताल; इन सब के समूह में (परमात्मा ने)

**तिसु विचि धरती थापि रखी धरम साल ॥**
धरती को धर्म कमाने का स्थान बना के टिका दिया है।

**तिसु विचि जीअ जुगति के रंग ॥**
यह धरती ऊपर कई युक्ति और रंगों के जीव (निवास करते हैं),

**तिन के नाम अनेक अनंत ॥**
जिस के अनेक तथा अनगिनत ही नाम हैं।

**करमी करमी होइ वीचारु ॥**
(इन अनेक जीवों के) अपने-अपने किए हुए कर्मों अनुसार (प्रभु के द्वार पर) न्याय होता है

**सचा आपि सचा दरबारु ॥**
परमात्मा आप सच्चा है, उसका दरबार भी सच्चा है।

**तिथै सोहनि पंच परवाणु ॥**
उस (प्रभु के) दरबार में स्वीकृत संत जन शोभते हैं,

**नदरी करमि पवै नीसाणु ॥**
वे दयालु प्रभु की ओर से अनुग्रह का निशान प्राप्त करते हैं।

**कच पकाई ओथै पाइ ॥**
(आध्यात्मिक तौर पर) कौन पक्का है तथा कौन कच्चा है परमात्मा के द्वार पर जा कर मालूम होता है।

**नानक गइआ जापै जाइ ॥३४॥**
हे नानक! परमात्मा के द्वार ऊपर जाने से ही समझ आती है (कि कौन है पक्का या कच्चा) ॥३४॥

**धरम खंड का एहो धरमु ॥**
धर्म खंड का यही कर्तव्य है, (जो ऊपर बताया गया है)।

**गिआन खंड का आखहु करमु ॥**
अब ज्ञान खंड का कर्तव्य (भी) समझ लो (जो आने वाले छंदों में है)।

**केते पवण पाणी वैसंतर केते कान महेस ॥**
(परमात्मा की रचना में) कई प्रकार के पवन, पानी तथा अग्नि हैं, कई कृष्ण हैं तथा कई शिव हैं।

**केते बरमे घाड़ति घड़ीअहि रूप रंग के वेस ॥**
कई ब्रह्मा पैदा किए जा रहे हैं, जिस के कई रूप, कई रंग तथा कई वेश हैं।

**केतीआ करम भूमी मेर केते केते धू उपदेस ॥**
(परमात्मा की कुदरत में) अनेक धरतीं हैं, अनेक मेरू पर्वत, अनेक धरू भक्त तथा उस के उपदेश हैं।

**केते इंद चंद सूर केते केते मंडल देस ॥**
अनेक इंद्र देवता, चंद्रमा, अनेक सूरज और अनेक भवन-चक्र हैं।

**केते सिध बुध नाथ केते केते देवी वेस ॥**
अनेक सिद्ध लोग हैं, अनेक बुध अवतार हैं, अनेक नाथ हैं और अनेक देवी (के पहनावे) हैं।

**केते देव दानव मुनि केते केते रतन समुंद ॥**
(परमात्मा की रचना में) अनेक देवता और दैत्य हैं, अनेक मौनी हैं, अनेक प्रकार के रतन तथा (रतना के) समुद्र हैं।

**केतीआ खाणी केतीआ बाणी केते पात नरिंद ॥**
(जीव-रचना की) अनेक जीवन के स्रोतों हैं, अनेक वाणी हैं, अनेक बादशाह तथा राजा हैं,

**केतीआ सुरती सेवक केते नानक अंतु न अंतु ॥३५॥**
अनेक प्रकार के ध्यान (समाधि) हैं, अनेक सेवक हैं। हे नानक! (इन सब का) कोई अंत नहीं ॥३५॥

**गिआन खंड महि गिआनु परचंडु ॥**
ज्ञान खंड में (भाव, मनुष्य की ज्ञान अवस्था में) ज्ञान ही बलवान होता है।

**तिथै नाद बिनोद कोड अनंदु ॥**
यह अवस्था में (मानो) सब रागों, तमाशों तथा कौतुक का स्वाद आ जाता है।

**सरम खंड की बाणी रूपु ॥**
प्रयत्न/नम्रता वाली अवस्था की वाणी सुंदर है।

**तिथै घाड़ति घड़ीऐ बहुतु अनूपु ॥**
बहुत सुंदरता के रूपों को वहां बनाया गया है।

**ता कीआ गला कथीआ ना जाहि ॥**
उस अवस्था की बातें बयान नहीं की जा सकतीं।

**जे को कहै पिछै पछुताइ ॥**
अगर कोई मनुष्य बयान करता है, तो बाद में पछताता है (क्योंकि वह बयान करने के असमर्थ रहता है)।

**तिथै घड़ीऐ सुरति मति मनि बुधि ॥**
उस अवस्था में मनुष्य की चेतना तथा बुद्धि ऊंची हो जाती है, और मन में जाग्रत पैदा हो जाती है।

**तिथै घड़ीऐ सुरा सिधा की सुधि ॥३६॥**
(शरम खंड की) उस अवस्था में देवता तथा सिद्ध लोगों वाली अकल (मनुष्य के अन्दर) बन जाती है ॥३६॥

**करम खंड की बाणी जोरु ॥**
मेहर वाली अवस्था में वाणी जोर पकड़ती है,

**तिथै होरु न कोई होरु ॥**
उस अवस्था में (मनुष्य के हृदय में) परमात्मा के बग़ैर कोई दूसरा बिलकुल ही नहीं रहता।

**तिथै जोध महाबल सूर ॥**
उस अवस्था में मनुष्य जोधा, महाबली तथा शूरवीर जैसा होता है,

**तिन महि रामु रहिआ भरपूर ॥**
और उस के रोम-रोम में परमात्मा रह रहा होता है।

**तिथै सीतो सीता महिमा माहि ॥**

उस (मेहर वाली) अवस्था में पहुंचे हुए मनुष्यों का मन केवल परमात्मा की बड़ाई में संतृप्त रहता है।

**ता के रूप न कथने जाहि ॥**

उस अवस्था वाले के सुन्दर रूप वर्णन नहीं किए जा सकते।

**ना ओहि मरहि न ठागे जाहि ॥**

(उस अवस्था में) वह आत्मिक मौत नहीं मरता तथा माया उस को ठग नहीं सकती,

**जिन कै रामु वसै मन माहि ॥**

जिस के मन में परमात्मा रहता है।

**तिथै भगत वसहि के लोअ ॥**

उस अवस्था में कई भवनों के भक्त जन निवास करते हैं,

**करहि अनंदु सचा मनि सोइ ॥**

जो सदा खिले रहते हैं, (क्योंकि) वह सच्चा परमात्मा उस के मन में (मौजूद) है।

**सच खंडि वसै निरंकारु ॥**

सत्य खंड वाली अवस्था में परमात्मा आप ही रहता है,

**करि करि वेखै नदरि निहाल ॥**

जो सृष्टि को रच-रच के मेहर की नज़र से उस की देख-भाल करता है।

**तिथै खंड मंडल वरभंड ॥**

उस अवस्था में मनुष्य को अनेक खंड, मंडल तथा अनेक ब्रह्मांड महसूस होते हैं।

**जे को कथै त अंत न अंत ॥**

अगर कोई मनुष्य इस का कथन करने लगे, तो उस की सीमा नहीं बता सकते।

**तिथै लोअ लोअ आकार ॥**

उस अवस्था में अनेक मण्डल तथा अकार दिखते हैं, (जिस सब में)

**जिव जिव हुकमु तिवै तिव कार ॥**

उसे तरह सब चल रहा है जैसे परमात्मा का हुक्म होता है (उस की रज़ा अनुसार)।

**वेखै विगसै करि वीचारु ॥**
(उस अवस्था में महसूस होता है कि) परमात्मा विचार करके (सब जीवों की) देख-भाल करता है और खुश होता है।

**नानक कथना करड़ा सारु ॥३७॥**
हे नानक! इस अवस्था का कथन करना बहुत ही कठिन है ॥३७॥

**जतु पाहारा धीरजु सुनिआरु ॥**
(अगर) स्वयं-संयम दुकान (हो), धीरज सुनार बन जाए,

**अहरणि मति वेदु हथीआरु ॥**
मनुष्य की अपनी बुद्धि अहरन हो, (उस अहरन ऊपर) ज्ञान हथौड़ा (बज जाए)।

**भउ खला अगनि तप ताउ ॥**
(अगर) परमात्मा का डर धौंकनी (हो), मेहनत की कमाई आग (हो),

**भांडा भाउ अमृतु तितु ढालि ॥**
प्रेम कुठाली हो तो उस (कुठाली) में परमात्मा का अमृत नाम डाल के,

**घड़ीऐ सबदु सची टकसाल ॥**
(ऐसी) सच्ची टकसाल में (गुरु का) शब्द संवारा जाता है।

**जिन कउ नदरि करमु तिन कार ॥**
यह कार उस मनुष्यों की है, जिस ऊपर मेहर की नज़र होती है।

**नानक नदरी नदरि निहाल ॥३८॥**
जिन्हें ऊपर आशीष होती है, हे नानक! वह मनुष्य परमात्मा की कृपा की नजर से निहाल हो जाता है ॥३८॥

**सलोकु ॥**
श्लोक

**पवणु गुरू पाणी पिता माता धरति महतु ॥**
(कुदरत में) वायु गुरु जैसी है, जल पिता है, और पृथ्वी सभी की महान माँ है।

**दिवसु राति दुइ दाई दाइआ खेलै सगल जगतु ॥**
दिन और रात दोनों खेलने तथा खिलाने वाले (नर्स) हैं, और सारा संसार खेल रहा है।

**चंगिआईआ बुरिआईआ वाचै धरमु हदूरि ॥**

धर्मराज परमात्मा की मौजूदगी में (जीवों के किए हुए) अच्छे तथा बुरे काम विचारता है।

**करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि ॥**

अपने आप के (इन किए हुए) कर्मों के अनुसार कई जीव परमात्मा के निकट हो जाते हैं और कई दूर हो जाते हैं।

**जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि ॥**

हे नानक! जिस मनुष्यों ने परमात्मा का नाम स्मरण किया है, वह अपनी मेहनत सफल कर गए हैं।

**नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि ॥१॥**

(परमात्मा के द्वार ऊपर) वह उज्ज्वल मुख वाले हैं और (और भी) कई जीव उस की संगत में (रह के बुराई से दूर हो कर) आज़ाद हो गए हैं ॥१॥